इस्लाम के बारे में प्रचलित प्रश्नों के विश्वकोश से चुने हुए कुछ प्रश्न

(अनुखंड : ब्रह्मांड की रचना)

300355-44470600-

شركاء التنفيذ:

دار الإسلام جمعية الربوة رواد الترجمة المحتوى الإسلامي

يتاح طباعة هذا الإصدار ونشره بأي وسيلة مع
الالتزام بالإشارة إلى المصدر وعدم التغيير في النص.

Telephone: +966114454900
ceo@rabwah.sa
P.O.BOX: 29465
RIYADH: 11557
www.islamhouse.com

प्रश्न संख्या : 16

जीवन का आरंभ कैसे हुआ?

उत्तर :

महत्व /1

प्रश्न : जीवन का आरंभ कैसे हुआ?

उत्तर : अल्लाह सदा से रहा है। उससे पहले कुछ नहीं था। फिर उसने सृष्टि की रचना की, जिसका पहले कोई अस्तित्व नहीं था। अल्लाह ने उसकी रचना बिना किसी पूर्व उदाहरण के की। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है : ﴿إِنَّ رَبَّكُمُ ٱللَّهُ ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ فِى سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ ٱسْتَوَىٰ عَلَى ٱلْعَرْشِ يُغْشِى ٱلَّيْلَ ٱلنَّهَارَ يَطْلُبُهُۥ حَثِيثًا وَٱلشَّمْسَ وَٱلْقَمَرَ وَٱلنُّجُومَ مُسَخَّرَٰتٍۭ بِأَمْرِهِۦٓ أَلَا لَهُ ٱلْخَلْقُ وَٱلْأَمْرُ تَبَارَكَ ٱللَّهُ رَبُّ ٱلْعَٰلَمِينَ﴾"निःसंदेह तुम्हारा रब वह अल्लाह है, जिसने आकाशों तथा धरती को छह दिनों में बनाया। फिर अर्श (सिंहासन) पर बुलंद हुआ। वह रात से दिन को ढाँप देता है, जो उसके पीछे लगातार तेज़ी के साथ चला आता है। तथा सूर्य और चाँद और तारे (बनाए), इस हाल में कि वे उसके आदेश के अधीन किए हुए हैं। सुन लो! सृष्टि करना और आदेश देना केवल उसी के लिए है। बहुत बरकत वाला है अल्लाह, जो सारे संसारों का रब है।"[सूरा अल-आराफ़ : 54]इमाम बुख़ारी ने सहीह बुख़ारी में इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अनहु से रिवायत किया है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :"अल्लाह था और उससे पहले कुछ नहीं था। उसका अर्श पानी पर था।

फिर आकाशों एवं पृथ्वी की रचना की और ज़िक्र (लौहे महफ़ूज़) में हर चीज़ को लिख दिया।"

अल्लाह ने मानव-पिता आदम अलैहिस्सलाम को पैदा किया। सहीह मुस्लिम में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अनहु से वर्णित एक हदीस में है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "सबसे उत्तम दिन, जिसपर सूरज निकला, जुमा का दिन है। इसी दिन आदम पैदा किए गए, इसी दिन जन्नत में दाख़िल किए गए और इसी दिन वहाँ से निकाले गए।"

उच्च एवं महान अल्लाह ने इन्सान की रचना का वर्णन करते हुए फ़रमाया : ﴿وَلَقَدْ خَلَقْنَا ٱلْإِنسَـٰنَ مِن سُلَـٰلَةٍ مِّن طِينٍ﴾ "और निःसंदेह हमने मनुष्य को तुच्छ मिट्टी के एक सार से पैदा किया।ثُمَّ جَعَلْنَـٰهُ نُطْفَةً فِى قَرَارٍ مَّكِينٍ फिर हमने उसे वीर्य बनाकर एक सुरक्षित स्थान में रखा। ثُمَّ خَلَقْنَا ٱلنُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا ٱلْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا ٱلْمُضْغَةَ عِظَـٰمًا فَكَسَوْنَا ٱلْعِظَـٰمَ لَحْمًا ثُمَّ أَنشَأْنَـٰهُ خَلْقًا ءَاخَرَ فَتَبَارَكَ ٱللَّهُ أَحْسَنُ ٱلْخَـٰلِقِينَ﴾ फिर हमने उस वीर्य को एक जमा हुआ रक्त बनाया, फिर हमने उस जमे हुए रक्त को एक बोटी बनाया, फिर हमने उस बोटी को हड्डियाँ बनाया, फिर हमने उन हड्डियों को कुछ माँस पहनाया, फिर हमने उसे एक अन्य रूप में पैदा कर दिया। तो बहुत बरकत वाला है अल्लाह, जो मात्रा निर्धारित करने वालों में सबसे अच्छा है।" [सूरा अल-मोमिनून : 13-14]

और एक अन्य स्थान में कहा है : يَـٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱتَّقُوا۟ رَبَّكُمُ ٱلَّذِى خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَٰحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا﴾ زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَآءً وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ

﴿ٱلَّذِى تَسَآءَلُونَ بِهِۦ وَٱلۡأَرۡحَامَ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلَيۡكُمۡ رَقِيبًا﴾ "ऐ लोगो! अपने उस रब से डरो, जिसने तुम्हें एक जीव (आदम) से पैदा किया तथा उसी से उसके जोड़े (हव्वा) को पैदा किया और उन दोनों से बहुत-से नर-नारी फैला दिए। उस अल्लाह से डरो, जिसके माध्यम से तुम एक-दूसरे से माँगते हो, तथा रिश्ते-नाते को तोड़ने से डरो। निःसंदेह अल्लाह तुम्हारा निरीक्षक है।" [सूरा अल-निसा : 1]

इन आयतों में अल्लाह ने आरंभ से अंत तक मानव रचना के विभिन्न चरणों को बयान किया है। सबसे पहले मानव पिता आदम अलैहिस्सलाम की रचना का वर्णन किया है और बताया है कि उनको तुच्छ मिट्टी के सार से पैदा किया है। यानी उनको पैदा करने के लिए जिस मिट्टी का प्रयोग हुआ था, उसे पूरी धरती से लिया गया था। यही कारण है कि उनकी संतान भी धरती के स्वभाव की तरह अलग-अलग स्वभाव की है। कोई पुण्यकारी है, तो कोई पापी और कोई मध्यम। कोई नर्म स्वभाव का है, तो कोई गर्म स्वभाव का और कोई मध्यम।

अल्लाह ने आकाशों, धरती एवं उनके बीच मौजूद सारी चीज़ों का वर्णन करते हुए कहा है : ﴿خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ بِغَيۡرِ عَمَدٖ تَرَوۡنَهَاۖ وَأَلۡقَىٰ فِي ٱلۡأَرۡضِ رَوَٰسِيَ أَن تَمِيدَ بِكُمۡ وَبَثَّ فِيهَا مِن كُلِّ دَآبَّةٖۚ وَأَنزَلۡنَا مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءٗ فَأَنۢبَتۡنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوۡجٖ كَرِيمٍ﴾ "उसने आकाशों को बिना स्तंभों के पैदा किया, जिन्हें तुम देखते हो। और धरती में पर्वत डाल दिए, ताकि वह तुम्हें लेकर हिलने-डोलने न लगे। और उसमें ऊपर हर प्रकार के जीव फैला दिए। तथा हमने आकाश से पानी उतारा, फिर उसमें हर तरह की अच्छी प्रकार की चीजें

उगाई।" [सूरा लुक़मान : 10] दरूद व सलाम हो हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, आपके परिवार और तमाम साथियों पर।

एकीकृत संख्या : 3200

विषय सूची

जीवन का आरंभ कैसे हुआ? 3
विषय सूची..7